eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 03, March 2025

प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में जीवन मूल्य

डॉ0 सौरभ सिंह[1]
[1]सहायक प्राध्यापक शिक्षा विभाग, लाला महादेव प्रसाद वर्मा बालिका महाविद्यालय, लखनऊ उ0प्र0

Received: 15 March 2025 Accepted & Reviewed: 25 March 2025, Published: 31 March 2025

Abstract

सभ्य जगत की भव्य एवं आकर्षक दिखने वाली समस्त वस्तुएँ शिक्षा की ही देन है। शिक्षा ही सुसंस्कृत मानव को मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं सांसरिक संतुष्टि प्रदान करती है। मानव की उन्नति एवं सभ्यता की प्रगति का यही एक मात्र साधन है। शिक्षा का प्रादुर्भाव मानवीय चेतना के आरम्भ से ही होता है। चेतन अवस्था प्राप्त करने के समय से ही मानव अपनी संतति को शिक्षा प्रदान करता आया है और इसके इतिहास का आरम्भ भी यहीं से समझना चाहिए। शिक्षा प्राणिमात्र की एक सहज क्रिया है। यह क्रिया मानव जाति की ही नहीं, व्यापक रूप से जीव मात्र पशु–पक्षी इत्यादि की है। यही जीवों के अस्तित्व में सहायक है। यह शिक्षा की ही विशेषता है कि जीवन के सामान्य व्यवहारों में समान होने पर भी मनुष्य विवेकशील प्राणी के रूप में अन्य समस्त प्राणियों से विशिष्ट है, इसीलिए सर्वोत्कृष्ट प्राणी है। शिक्षा अपने परिष्कृत एवं शुद्ध रूप में मानव को विवेकशील बनाती है।

संकेत शब्द:– प्राथमिक शिक्षा, जीवन मूल्य।

Introduction

प्राथमिक शब्द का सामान्य अर्थ है प्रारम्भिक या मुख्य। इस प्रकार प्रारम्भिक शिक्षा का मुख्य अर्थ है, प्रारम्भिक शिक्षा या मुख्य शिक्षा। प्रारम्भिक शिक्षा इस लिए कि यह बच्चों को प्रारम्भ में दी जाती है और मुख्य शिक्षा इसलिए कि यह आगे की शिक्षा की नींव होती है। इस प्राथमिक शब्द के पीछे एक भाव और छिपा है और वह है कि इसके द्वारा बच्चों को शिक्षा प्रक्रिया की प्रथम आवश्यकता सम्प्रेषण के माध्यम से भाषा की शिक्षा दी जाती है और उन्हें सामाजिक जीवन जीने की प्राथमिक क्रियाओं में प्रशिक्षित किया जाता है।

15 अगस्त 1947 को हमारा देश स्वतन्त्र हुआ और 26 जनवरी 1950 को हमारा अपना संविधान लागू हुआ। प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में प्रारम्भ में इसकी 45 वीं धारा में स्पष्ट निर्देश दिया गया कि राज्य इस संविधान के लागू होने के समय से दस वर्ष के अन्दर 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों की अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करेगा और तभी से हमारे देश में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क करने की और ठोस कदम उठाए गये यह बात दूसरी है कि उस लक्ष्य को दस वर्षों के अन्दर तो क्या आज 73 वर्ष बाद भी प्राप्त नहीं कर सके हैं। इस लक्ष्य की प्राप्ति में अनेक बाधाएं रही हैं। जिनमें से मुख्य सामाजिक पिछड़ापन, धनाभाव बढ़ती हुई जनसंख्या, ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा की कमी ।

प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में प्राथमिक शिक्षा प्रथम प्राथमिकता की वस्तु है। यह पहली सीढ़ी है जिसे सफलतापूर्वक पार करके ही कोई राष्ट्र अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचता है। राष्ट्रीय जीवन के साथ जितना धनिष्ठ सम्बन्ध प्राथमिक शिक्षा का है उतना माध्यमिक या उच्च शिक्षा का नहीं है। राष्ट्रीय विचारधारा एवं

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 03, March 2025

चरित्र का निर्माण करने में जितना महत्वपूर्ण स्थान इसका है उतना किसी दूसरी सामाजिक, राजनैतिक या शैक्षणिक गतिविधि का नहीं है। इसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति या वर्ग से न होकर देश की पूरी जनसंख्या से होता है। इसका हर कदम हर व्यक्ति के जीवन से सम्पर्क होता है। जीवन मूल्य मानवीय आचरण एवं व्यवहारों का मापदण्ड होता है। जीवन मूल्यों का आधार मानवीय अनुभव सामाजिक परम्पराये एवं न्याय तथा सांस्कृतिक आदर्श होते है। मानवीय जीवन मूल्यों के नियम एवं विकास में आध्यात्मवाद, ईश्वरवाद नियतिवाद एवं परलोकवाद आदि धार्मिक एवं दर्शनिक सिद्धान्तों का समुचित योगदान होता है।

आधुनिक मानवीय समाज में मूल्यों की अवधारणा ही बदल गई है आधुनिक भारतीय समाज का स्वरूप प्राचीन भारतीय समाज से कई अर्थों में भिन्न दिखाई पड़ता है। प्राचीन सामायिक मूल्य विलुप्त हो रहे है परम्परागत मान्यतायें और प्राथमिकतायें बदल रही हैं। हम अपने आध्यात्म के महत्व को नकारते जा रहे हैं और पाश्चात्य जगत के जीवन मूल्यों और उनकी भौतिक वादी सभ्यता को अपनाते जा रहे हैं। भारतीय जीवन मूल्यों का क्षरण हो रहा है। प्रसिद्ध अर्धशास्त्री ग्रेशम का नियम है कि ष्खोटा सिक्का अच्छे सिक्के को चलन से बाहर कर देता हैं। भारतीय जीवन दर्शन पर ग्रेशम का नियम लागू हो रहा है। शिक्षा मनीषियों एवं समाज शास्त्रियों के जीवन मूल्यों में लगातार क्षरण के मुख्य कारण उपभोक्तावाद पाश्चात्म सभ्यता का अन्धानुकरण, भौतिकवादी सभ्यता के प्रति अप्रत्याशित लगाव, अनीश्वरवादी प्रवृत्ति, वैज्ञानिक प्रवृति का विकास एवं तर्क प्रधान चिन्तन को माना है।

फिर भी इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि मानवीय मूल्यों का हास हुआ है, नाश नहीं। जीवन मूल्य अवश्य ही दब गये हैं, उनका स्वरूप बदल गया है किन्तु नष्ट नहीं हुए। आज भी भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति जीवित है। आज भी मानव–मानव के मध्य रागात्मक सम्बन्ध है। असत्य, ठगी चोरी, पापाचार और भ्रष्टाचार को अनैतिक आचारण माना जाता है।

प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में जीवन मूल्य :– प्राथमिक शिक्षा को समस्त शैक्षिक प्रक्रिया की आधारशिला कहा जाता है। वस्तुतः शैक्षिक प्रक्रिया का प्रथम सोपान प्राथमिक शिक्षा को ही माना जाता है। यही कारण है कि सभी देश अपनी शैक्षिक योजनाओं का सृजन करते समय प्राथमिक शिक्षा को प्राथमिकता देने का प्रयास करते हैं। शैक्षिक संरचना के अन्य सोपानों की भाँति प्राथमिक शिक्षा भी युग, देश, काल परिवेश, शासन व्यवस्था तथा संशाधनो की उपलब्धि के अनुसार बदलती रही है।

मूल्य शब्द को विद्धानों ने विभिन्न अर्थो में परिभाषित किया है। मूल्य शब्द की व्याख्या दार्शनिक, आध्यात्मिक, समाजशास्त्रीय, और मनोवैज्ञानिक कई दृष्टिकोण से किया गया है। प्रत्येक देश और समाज का अपना जीवन दर्शन होता है इसी के अनुरूप लोगों ने इस शब्द की व्याख्या की है ।

मूल्य शब्द अंग्रेजी के वैल्यु शब्द का समानर्थी है। यह लैटिन भाषा के वैल्यु से बना है जिसका अर्थ योग्यता या महत्व से है। मूल्य को संस्कृत भाषा में ईष्ट कहा जाता है। ईष्ट का अर्थ होता है ष्वह जो कि इच्छित हैष्। वास्तव में मूल्य वे मापदण्ड हैं जिसके द्वारा लक्ष्यों का चुनाव किया जाता है। मूल्य यर्थाथ और आदर्श के विभेद के मध्य संयोजक की भूमिका निभाते है। विवेक शक्ति उत्पन्न होने पर ही मूल्यों का बोध होता है नैतिक मूल्यों एवं आस्तिकता में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। आस्तिकता से धार्मिकता उत्पन्न होती है और उसी के साथ भक्ति प्रेम सत्य एवं सदाचरण का प्रवेश शरीर में एवं व्यवहार में प्रकट होता है। इस तथ्य को

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 03, March 2025

वैदिक मनिषियो ने श्असतो मा सद्गमयश कहाँ हैश अर्थात हे प्रभू मुझे असत्य से सत्य की ओर प्रेरित करो। सत्य, प्रेम और भक्ति के साथ बुद्धि या विवेक का सम्बन्ध अनिवार्य है। बौद्धिक तत्व को सत्य की सिद्धि का साधन मानकर कल्याण की कामना की जाती है। साररूप में मूल्य चाहे व्याहारिक क्रिया आदर्शपरक परमार्थिक हो या नैतिक यह सभी मानव, समाज को नैतिक पूर्ण जीवन जीने में मद्द करता है। भारतीय मनीषियों ने मानवीय मूल्यों की विवेचना मानव मात्र के कल्याण की कामना करते हुए की है। हमारा आदर्श वाक्य है–

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्त निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माँ कश्चित् दुखः भागवेत।"

भारतीय मनीषियों ने मूल्यों के लिए पुरूषार्थ शब्द का प्रयोग किया है। ये पुरुषार्थ चार हैं धर्म अर्थ, काम और मोक्ष इन्हे पुरुषार्थ चतुष्टय कहा जाता है। परम पुरूषार्थ मोक्ष है यही मानव का अन्तिम उदेश्य एवं चरम लक्ष्य है जहाँ पर आत्मिक शक्ति और परम सुख की उपलब्धि होती है। इसी को अध्यात्मवाद कहते हैं। यही पूर्णता की स्थिति है। इस अवस्था को मनुष्य सशरीर प्राप्त कर सकता है। शेष तीन पुरूषार्थ धर्म, अर्ध और काम लौकिक या व्यावाहारिक कहे जाते हैं। अर्थ और काम वही नैतिक माना जाता है। जो कि धर्म समस्त हो अन्यथा अनैतिक है। अन्तिम तीन मूल्य व्यावाहारिक अवश्य है परन्तु विचारकों ने इन्हें साध्य नहीं माना है। धर्म, अर्थ एवं काम साधन है और मोक्ष साध्य है।

एक तरह से मूल्य शिक्षा के नीति निर्देशक तत्व हैं। अर्थात मूल्य शिक्षा को दिशा निर्देश प्रदान करते हैं। इनके द्वारा शिक्षा के स्वरूप का निर्धारण किया जाता है। मूल्यविहीन शिक्षा निरर्थक और निर्जीव समझी जाती है। मूल्य शिक्षा को आधार प्रदान करते हैं। शिक्षा के उद्देश्य पाठ्यक्रम शिक्षण विधियाँ, शैक्षिक अनुशासन आदि सभी पर मूल्यों का प्रभाव पड़ता है। प्राचीन वैदिक शिक्षा से लेकर आधुनिक शिक्षा पर मूल्यों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। संक्षेप में कहा जाए तो शिक्षा का स्वरूप मूल्यों पर आधारित होता है। अतः शिक्षा का मूल्यों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। वैसे तो शिक्षा स्वयं में सबसे बड़ा मूल्य है। इसका प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर इतना गहरा पड़ता है, कि वह बुराईयो के स्थान पर अच्छाइयों को ग्रहण करने लगता है। वह उस स्थिति को पाना चाहता है, जो उसे दुःख या अपमान के स्थान पर सुख, सन्तुष्टि और सम्मान दिला सके, उन क्रियाओं को करता है जो सही लाभदायक मान्यता प्राप्त होती है। शैक्षिक मूल्यों के द्वारा छात्र आत्मानुभूति करते हैं और शिक्षक शैक्षिक आवश्यकताओं को समझने में सफल हो जाते है। जब छात्र पाठ्यक्रम से विषयों का चयन करता है तभी से मूल्य निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। यदि बालक विद्यालय के किसी कार्यक्रम में रूचि लेता है तो यह इस बात का संकेत है कि वह उसका मूल्यांकन करता है। शैक्षिक मूल्यों मै तीन प्रमुख बातें होती हैं।

1. उपयोगिता,
2. सोद्देश्यता
3. उपयुक्तता

शैक्षिक मूल्यों को मूर्त रूप देने के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है और शिक्षण विधियों द्वारा उन्हें प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। यह सच है कि मूल्य पढ़ाने से नहीं बल्कि व्यावहारिक जीवन में सीखे जाते हैं। मूल्यपरक शिक्षा का सम्बन्ध केवल शिक्षा संस्थाओं तक ही सीमित नहीं है वरन बालको में

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 03, March 2025

मूल्यों का विकास पारिवारिक एवं सामुदायिक क्रियाओं में भाग लेने से स्वाभाविक रूप से होता है। परन्तु जिन बातों की जानकारी परिवार एवं समुदाय में सम्भव नहीं होती, उन जीवनमूल्यों का ज्ञान विद्यालय में सम्भव हो सकता है। मूल्यपरक शिक्षा से बालको में सहयोग सहानुभूति, परोपकार, आतिथ्यसत्कार, भातृत्व की भावना कर्तव्यनिष्ठा, स्वाभिमान, श्रम की महत्ता, न्याय आत्मविश्वास आत्मनियंत्रण सेवाभाव तथा ईमानदारी और मानवतावाद की भावनाये विकसित करने में सहायता मिलती है। शिक्षक का स्वयं का जीवन, आचार–विचार एवं व्यवहार बालकों के लिए आदर्श होता है। बालक बहुत कुछ अपने शिक्षकों से सीखते हैं। शिक्षा संस्थाओं के वातावरण का भी छात्रों पर प्रभाव पढ़ता है। कहने का अभिप्राय यह है कि मूल्यों का सम्बन्ध सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था से होता है।

मानव जीवन में मूल्यों का सदैव महत्व रहा है। परन्तु वर्तमान परिवर्तनकारी समाज में जो ऊथल पुथल हो रहा है, उससे अन्याय, अत्माचार, हिंसा और आतंकवाद बढ़ रहा है। मानवता विखण्डित हुई है। समाज में अशान्ति एवं भय का वातावरण बन रहा है। ऐसे समाज में मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता सभी अनुभव कर रहे हैं।

प्रायः विश्व के सभी समाजों में भ्रष्टाचार अन्याय अनैतिकता धर्मान्धता और अपराध सभी क्षेत्रों में बढ़ रहें हैं। समाज का सन्तुलन बिगड़ रहा है। ऐसे विषाक्त वातावरण को नियंत्रित करने के लिए मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता है।

निष्कर्ष:– आधुनिक समाज भौतिकवाद की चकाचौंध से भ्रमित है। समाज में मिथ्या मूल्यों, बनावटी नायको एवं अनैतिक लोगों की पूजा हो रही है। मिथ्या मूल्य और झूठे नायक मानवता को समूल नष्ट कर देना चाहते हैं। अतः भौतिकता की घुटन से बचने के लिए एवं मानवतावाद को सुरक्षित रखने के लिए जीवन मूल्यपरकशिक्षा को प्रसारित करने की आवश्यकता है। मानव समाज दलबन्दी, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, हिंसा और आतंकवाद के घेरे में है। राजनैतिक व्यवस्था का दिन प्रतिदिन पतन हो रहा है। राजनैतिक आदर्श और विचार धारा का लोप हो रहा है। विकास की प्रक्रिया थम सी गई है। राजनैतिक शाक्ति प्राप्त करने के लिए अनैतिक हथकण्डे अपनाए जा रहे हैं। ऐसी सोच मानव समाज को विनाश की ओर ले जायेगी । मानव समाज के उत्थान के लिए उसके अमन–चौन को बरकरार रखने के लिए लोगों को जीवन मूल्य परक शिक्षा देना आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–

- डॉ० बाजपेयी एल.बी., (2011). शिक्षा में नवाचार एवं तकनीकी. लखनऊ: आलोक प्रकाशन
- मिश्रा डॉ० आर०एम०, (2003). शिक्षण तकनीकि एवं मूल्यांकन, लखनऊ: आलोक प्रकाशन
- लाल रमन विहारी शर्मा, कृष्ण कान्त (2011) भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्यायें, मेरठ: आर० लाल बुक डिपो
- भटाचार्च डॉ० जी.सी., (2011). अग्रवाल अध्यापक शिक्षा, पब्लिकेशन आगरा–2
- प्रसाद डॉ० जयशंकर, (1974).प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास. पटना: विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
- सारस्वत:डॉ० मालती एवं गौतम एस.एल., भारत शैक्षिक प्रणाली का विकास, लखनऊ: आलोक प्रकाशन

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 03, March 2025

- पाठक पी0डी0, (1988) शिक्षा और उसकी समस्यायें, आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन.
- लाल रमन विहारी, फ्लोड सुनीता (2011) शैक्षिक चिंत्तन एवं प्रयोग, मेरठ: आर. लाल बुक डिपो.
- सारस्वत डा० मालती, सिन्हा डा० नीता, मोहन प्रो० मदन, (2011) भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें, इलाहाबाद: न्यू कैलाश
- प्रकाशन मिश्रा डा० आर०एम०, (2004).शैक्षिक तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्धन, लखनऊरू आलोक प्रकाशन